International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 3; Issue 8; August 2017; Page No. 54-55

बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) प्रदेश के बॉदा–चित्रकूट धाम जनपद का आरण्य क्षेत्र : पादक भूगोल में एक अध्ययन

शिशंकर द्विवेदी, रमाकन्त द्विवेदी

सहायक प्राध्यापक, भूगोल, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी, बॉदा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

पृथ्वी के जीवमण्डल में पादप जगत का सार्वाधिक महत्व है। पृथ्वी का वह स्वरूप जिसने जीनव की कल्पना को सार्थक किया वह पादप जगत ही है। इस पृथ्वी पर जीवन पादप जगत से चालू होता है, और अन्त भी पादप से होगा। इस लिए इसका अध्ययन और भी आवश्यक है। इस पृथ्वी पर पादप समूह को वनस्पति कहा गया है। पृथ्वी के विस्तृत भू–भाग पर वनस्पति के विसतृत भाग के आवरण को आरण्य कहा गया है। इन आरण्यों का बहुल्ता से उल्लेख हमारे वेदों में विस्तृत से मिलता है। वेद काल में भू–खण्ड की पहचान आरण्यों से ही होती थी। आज भी चित्रकूट–बॉदा जनपद के कुछ भाग आज भी वैदिक कालीन आरण्य के दर्शन कराते हैं, इन्हीं आरण्यों में हमारा अध्ययन क्षेत्र चित्रकूट–बॉदा का क्षेत्र आता है। परन्तु वर्तमान स्वरूप देख कर लगता है कि क्या कभी यह भू–भाग आरण्य थे। शोधार्थी का शोध पत्र जनपद में आरण्य क्षेत्र की खोज ही है।

मूल शब्द : पृथ्वी, जीवमण्डल, पादप जगत।

प्रस्तावना

हमारे वैदिक ग्रन्थों में द्युलोक शान्ति की प्रार्थना कि गई है, जसमें पृथ्वी में वनस्पतियों और वनस्पतियों का औषधियों के रूप में शान्ति के लिए प्रार्थना की गई है। अर्थात वैदिक जीवन का आधार प्रकृति और पर्यावरण रहा। बृहदारण्यक उपरिष में याज्ञवल्क्य ने जंगलों को ज्ञान का विशाल वन निरूपित किया है। उन्होंने उपदेश दिया है कि मानव को प्रकृति से सौहार्द बनाकर रखना चाहिए। अथर्ववेद के तीसरे कांड के 30 वें सूक्त में जो है उसके देवता चन्द्रमा हैं और 24वें सूक्त में देवता वनस्पति हैं।

हमारे 108 उपरिषदों में आरण्यकों की महिमा अनेक स्थानों पर की गयी है। मानव के आश्रम व्यास्था में दो आश्रम आरण्यक क्षेत्र के ही थे, इन आरण्यकों की महत्ता के कारण ही सदियों वर्ष पूर्व अध्ययन क्षेत्र में श्रीराम इन्हीं आरण्य में प्रवेश किया। अध्ययन क्षेत्र तीन माहाआरण्य क्षेत्र में आता है। यह क्षेत्र कभी विश्व विख्यात आरण्य के नाम से जाने जाते थे, जिनमें विन्ध्यारण्य दण्ड़कारण्य और तुड़कारण्य के नाम से जाना जाता था। शोधार्थी द्वारा इन्हीं आरण्यकों की खोज जनपद में करनी है और वैदिक कालीन वनस्पति क्षेत्र को वर्तमान क्षेत्र में ढ़ूढने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिसीमन – अध्ययन क्षेत्र बुन्देलखण्ड प्रदेश के मण्डल बॉदा के चित्रकूट और बॉदा जनपद सम्मलित जिनका भौगोलिक विस्तार 24^0 53′ –25^0 55′ उत्तरी अक्षांश तथा 80^0 07′ –81^0 34′ पूर्वीदेशान्तर के मध्य फैला हुआ है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तर में फतेपुर, पश्चिम में इलाहाबाद, पूर्व में हमीरपुर, तथा दक्षिण में रीवां, सतना, पन्ना और छतरपुर जनपद सीमा बनाते हैं। बुन्देलखण्ड़ में दस बड़ी नदियें प्रवाहित है जिसकी अन्य सहायक नदी–नालों की संख्या 70 से अधिक है। बुन्देलखण्ड़ के मध्य से बहने वाली धसान नदी दशाणनद का अपभ्रंश ही है। यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश दानों भू–भाग सर्वाधिक वनाछादित भाग है। लेकिन वर्तमान राजनैतिक गतिविधियों ने यहॉ की वनस्पतियों को नष्ट किया है जिससे यहॉ का वातावरण प्रभावित हुआ है जिससे यहॉ साल–दर साल सूखे की स्थिति बढ़ती जा रही है।

क्षेत्रफल – अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक क्षेत्रफल 7645 वर्गकिलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रदेश में अध्ययन क्षेत्र का छठा स्थान है।

बुन्देलखण्ड प्रदेश में चित्रकूट धाम एवं बॉदा जनपद की स्थिति

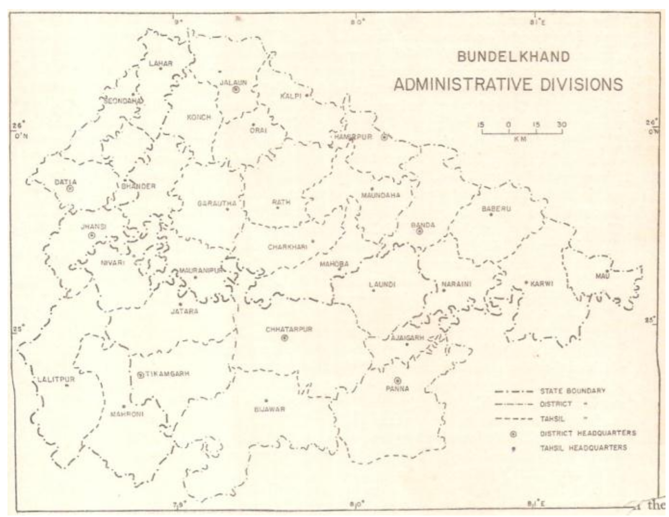

जनसंख्या गणना वर्ष 2011– अध्ययन क्षेत्र में कुल परिवार संख्या 488177 जिसमें 2791107 व्यक्ति निवास कर रहे हैं, 1493572 पुरूष तथा 1297535 महिला निवास करती है। जिसमें कुल ग्रामीण जनसंख्या 2419020 जिसमें 1296012 पुरूष तथा 1123008 महिला निवास करती है, जो प्रदेश में जनसंख्या की दृष्टि से 25वां स्थान है।

शोध का उद्देश्य– अध्ययन क्षेत्र में पर्यावरण की दृष्टि से प्रदेश का ही नहीं वरन् देश का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह क्षेत्र पर्यावरण का महान तीर्थ रहा। यह महान तीर्थ के साथ ही साथ ज्ञान–विज्ञान का केन्द्र विन्दु रहा है। इस लिए शोधार्थी का अध्ययन वर्तमान

पर्यावरण की खोज हेतु अपने अध्ययन का केन्द्र विन्दु वनस्पति क्षेत्र को चना, जिससे मानव और प्रकृति का सहचर्य पुनः स्थापित हो सके। यही शोधार्थी का उद्देश्य है।

विधि तन्त्र – प्रस्तुत शोध प्रपत्रा में वैदिक साहित्य से लेकर मध्यकाल और वर्तमान शोध साहित्य का अनुशीलन किया गया है साथ ही साथ प्रत्यक्षात्मक सर्वेक्षण, अनुभवात्मक सर्वेक्षण, एवं शासन से प्रकाशित द्वितीयक ऑकडों का प्रयोग किया गया है। जिसमें जनपद गजेटियर, जिला संख्यिकीय पुस्तिका, एवं इस क्षेत्र में प्रकाशित साहित्यक एवं आंकडों का प्रयोग किया गया।

शोध प्रपत्र में आरण्यक क्षेत्र – ऋग्वैदिक काल के अनुसार इस क्षेत्र में पुलिन्दों, निषादों, शबरों, भील आदि का निवास क्षेत्र था। इस लिए यह सिद्ध होता है कि रामयण काल में श्री राम के आगमन के समय तक यहॉ अनार्य संस्कृति थी। यहॉ काले गोल पाये जाते थे। श्री राम गामन के समय श्री राम ही एसे पुरूष यहॉ थे जो श्वेत वर्ण अर्थात गोरे रंग के थे।

आरण्यक और औषधीय गुण – प्रकूति का आधार पर्यावरण है और पर्यावरण का आधार वनस्पति हैं। अध्ययन क्षेत्र वनस्पति बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण ही यह आरण्यक कहलाता था और आज भी है उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक वनांचल क्षेत्र चित्रकूट–बॉदा जनपद में ही है। अनादि काल से ही चित्रकूट के चारों ओर फेली विन्ध्य पर्वतमालाऍ आयुर्वेदीय औषधियों का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। इसके कारण चित्रकूट में 500 से भी ज्यादा प्रकार की औषधियॉ पाई जाती हैं। लगातार कट रहे वनों, जलवायु परिवर्तन प्रभाव, तापमान प्रभाव यहॉ की औषधियों को प्रभावित किया है। वर्तमान में जो भी औषधियॉ है वह धीरे–धीरे लुप्त हो रही हैं। चित्रकूट परिक्षेत्र में प्रमुखता से दिखने वाली औषधियॉ निम्नवत हैं–

अंकोल, अडूस, अदरक, अनन्तमूल, अमलतास, असगन्धा, ऑवला, आक, इमली, ईसरमूल, उॅटकटेरा, कन्धी, कंट करंज, कन्दूरी, कपूरी जड़ी, करंज, कलिहारी, कसोंदी, कहुआ, कालमेघ, काला धतूरा, काली मुसली, केंवाच, कूडा, केउॅका, कैथा, कोडा, खैर, खरैंटी, गिलोय, गुंजा, गुडमार, मुलसकरी, गूलर, गेंदा, गेंठी, गोखुरू, गंभार, गोभी, अकोडा, चिरचिरा, जंगली प्याज, गुडमार, गुलसकरी, जलजमिनी, जामुनढाक, तुलसी, थूहर, दंती, दूधी वेल, धवई, नाही, निर्गुण्ड, नीम, पाढ़ी, पाताल कोहडा, पीपल, पुनर्नवा, प्याज, बबूल बहेड़ा, वायविडंग, बिच्छू, विधारा, बेल, ब्रम्हांडुकी, ब्राम्ही, भटकटैया, भॉगरा भुई, मकोय, महुआ, मालकंगनी, होडफली, सूसाकानी, मेहॅदी, मुण्डी, मेढकी, मोरपंखी, रेंडी, शुखपुष्पी, शंखपुष्पीनीली, शंखाहूली, शिविलिंगी, सतावर, सत्यानासी, सफेद मुसली, सरिवन, सफोका, सहदेई, सहिजन, सहदेवी, सिन्दूरी, सिरिस, सिहोरा, सेमल, सोनपाढ़ा हरसिंगार हलदी आदि प्रमुख वनस्पतियॉ चित्रकूट धाम में बहुलता से मिलती है। अध्यन क्षेत्र में आरोग्य धाम जो वनाऔषधि पर आधारित है, यहॉ सैकड़ो औषधियॉ उगाई जाती हैं।

निष्कर्ष

मानव जीवन के वनस्पतियों का महत्व महत्वपूर्ण है। वर्षा का निर्धारा वनस्पतियों से ही सम्भव हुआ है, इसके अभाव में वर्षा चक्र अनिश्चित हो जायेगा। जिस प्रकार जल जीवन और समाज के लिए उपयोगि है ठीक उसी प्रकार वनस्पति भी मानव जीवन और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इसी लिए कहा जाता है कि जंगल में मंगल है। वनस्पति हमें शुद्ध वायु, वर्षा चक्र का नियमतीकरण, बाढ़ का नियंत्रण, मृदा में उर्वरकता आदि भौतिक संतुलन के साथ मानव जीवन को सुख और स्वस्थ्य रखने में भी सहायक है। वनस्पति के औषधीय गुण तो हैं ही लेकिन इनमें ग्रह शांती के गुणों ने मानव जीवन के लिए और उपयोगी हो जाते हैं फिर भी मानव विकास के नाम पर इनका दोहन कर रहा है, जो मानव सभ्यता, विकास और स्वास्थ्य के लिए अभिषाप सिद्ध हो रहा है।

संदर्भ

1. डॉ. अवस्थी एन.एम. - पर्यावरण अध्ययन
2. डॉ. चौरसिया आर.ए. - पर्यावरण भूगोल
3. डॉ. सिंह सवेन्द्र - पर्यावरण भूगोल
4. डॉ. हुसैन माजिद - पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी
5. डॉ. सक्सेना हरि मोहन - पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी भूगोल
6. द्विवेदी रमाकान्त - पर्यावरण अध्ययन के भौगोलिक तत्व, कौशल्या पबलिकेशन आगरा 2017–2018
7. द्विवेदी रमाकान्त 2016 ''चित्रकूट धाम कर्वी जनपद में पर्यटन गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन'' अप्रकाशित शोध प्रबन्ध एपीएस रीवां विश्वविद्यालय, रीवा (मध्य प्रदेश)